

आफन्ती के किस्से

रचना—निर्देशन : डा. अंजना पुरी

गाना

ना, ना, ना, ना,

आओ मिलकर बैठे साथ, किस्सो की आई है रात
आई है किस्सों की रात, छिड़ी मसखरो की है बात
बड़े दिनों में बैठे आज सुने आफन्ती की कुछ बात

1. आफन्ती

2. होज्जा

3. नसरुद्दीन

4. अतेन्ती

1. क्या आप ही हो होज्जा ?

2. क्या आप ही हो आफन्ती ?

3. क्या आप ही हो नसरुद्दीन ?

4. क्या आप ही हो अतेन्ती ?

आफन्ती :—

हाँ मैं ही हूँ इन कहाँनियों का होज्जा, नसरुद्दीन, मैं ही हूँ आफन्ती और मैं ही हूँ अतेन्ती

गाना

मोटा साफा बांधे सिर पर निकला है गधे पर सवार है,
जाता है वो शहरों पार। पलक झपकते ही तो मिलता,
किसी न किसी नुक्कड़ पर—2,

इधर से गुजरे उधर को पहुँचे, दोस्ती उसकी सबसे है।

सच्चा दोस्त गरीबों का, दुश्मन है लुटेरो का,

उलझन को है वो सुलझाता, चुटकी भर की देर में

कहाँनी एक वो नयी बनाता, चलते फिरते खेल में

सूदखोर के होश उड़ाता, होशियारी की चाल से

सबक लुटेरो को सिखाता, अपने ही अंदाज में

मिल जुलकर हम साथ रहें, रंग भरी इस दुनियां में,

पहुँचायें न चोट किसी को, इरादे अपने नेक रहें।

कोरस

इसलिये। मसखरे की नयी कहानी।

सुनो कान से, देखो ध्यान से

कहती है ये बात पुरानी।।

कोरस ही से एक सूत्रधार दायें से और दूसरा बायें से निकलता है

सूत्रधार —1

तो दोस्तों — जिसके सिर पर पहुँचे साफा, वही बनेगा आफन्ती।।

सूत्रधार —2

कहानी एक सुनायेगा।

आपको वो हँसायेगा।

- सूत्रधार -1 कुछ स्नेह भरे
सूत्रधार -2 कुछ चुभन भरे
दोनों किस्से वो बतायेगा।

पहला किस्सा : अपनी मंजिल तोड़ रहा हूँ

- सूत्रधार -1 तो पहुँचा आफन्ती एक दिन सेठ के पास और
गाना -2 लिये उधार सोने के, सौ सिक्के आफन्ती ने
मेहनत करते-करते बना
इक दुमंजिला मकान
गीत को गाते-गाते कोरस पिरामिड द्वारा मकान बनाता है। गीत समाप्त होते-होते मकान भी खड़ा हो जाता है।
- सूत्रधार -2 जैसे ही बना मकान, आया दरवाजे पे सेठ और बोला.....
सेठ आफन्ती। ओ आफन्ती। एहे आफन्ती।
आफन्ती घर से निकलता है। वो झॉकता हैं। पहले दिखता है, उसका सिर फिर धड़, फिर एक टाँग और फिर दूसरी टाँग। एकदम उछलता हुआ सेठ के सामने पहुँचता है।
आफन्ती ओहो। तो आ गये आप ? आप ही को तो याद कर रहे थे हम। आईये। आईये। तशरीफ अंदर लाइये।
कोरस पिरामिड से उतरकर घर बैठक की दीवार बन जाती है।
सेठ बैठते-बैठते पर तो बना बहुत ही उम्दा, चुकाना है तुम्हें अब कर्जा।
आफन्ती सेठ जी, मकान तो बना अभी-अभी। हफते भर अगर आप रुक जा
सेठ नहीं, नहीं। बिल्कुल नहीं। कर्जा चुकाओ इसी वक्त अभी।
आफन्ती थोड़ा रुक जाते, मेरा मतलब थोड़ा वक्त मिल जाता
सेठ आफन्ती की तरफ ध्यान न देते हुए मकान को बारीकी से देखता है। सोचते हुए हुम्म.....देते हो मुझे अगर तुम दूसरी मंजिल.....तो करूँ मैं कर्जा माफ। नहीं अगर मंजूर ये तुमको.....तो वसूलूँगा मैं कर्जा अभी।
आफन्ती नाचता कूदता हुआ अरे मंजूर है। मंजूर हैं। मंजूर हैं। सोच ही रहा था मैं कि कैसे लौटाऊँ आपके पैसे। अच्छा हुआ सुझाया खुद ही आपने ये उपाये। मंजूर है। मंजूर हैं। मंजूर है।
कोरस के कुछ सदस्य घर की दीवार बने रहते हैं। बाकी सेठ का परिवार बन जाते हैं।
गाना -3 इतराता आता है सेठ, अपने परिवार के साथ।
दूसरी मंजिल हो गयी उसको, फैली सब तरफ़ ये बात।।
तक तक ता ता, तक तक ता ता
तक ता ता तिरकिर धा।
करके दोस्तों को इकट्ठा, आफन्ती कुछ दिन के बाद।
तोड़ने लगा दीवारें घर की, लिये गैंती अपने हाथ।।
धड़-धड़ धा-धा - धड़-धड़ तक-तक

धड़-धड़ धा-धा – तिरकिट धाधा
तिरकिट धा-धा तिरकिट तक-तक ।।
तिरकिट धा-धा तिरकिट धा ।

- सूत्रधार -2 सुनकर गैतियों की आवाज चिल्लाया सेठ जोर से
- सेठ एहे..... पागल हो गये हो क्या ? आफन्ती ? ए आफन्ती, सुनते हो ? क्यों तोड़ रहा हैं नये मकान को ? ए आफन्ती ओहो आफन्ती ।
- आफन्ती काम करते हुए अरे आपको उससे क्या मतलब ? बैठे रहिये इत्मिनान से ...
- कोरस दूसरी मंजिल में ।
- सेठ क्या ? क्या कहा ? इससे मेरा कोई मतलब नहीं ? इत्मिनान से बैठा हूँ ? तमतमाता हुआ अरे । दूसरी मंजिल पर हम रहते हैं, हमारा परिवार रहता है । इत्मिनान से बैठा रहूँ ? तुम्हारी इन दीवारों के साथ हमारी मंजिल भी गिर गयी तो ?
- आफन्ती तो ? मैं क्या जानूँ ? तो अपनी ही मंजिल तोड़ रहा हूँ, आपकी मंजिल तो नहीं । अच्छी तरह सम्भाल के रखिये अपनी मंजिल को । कहीं गिर गयी, तो उसके नीचे हम लोग दब जायेंगे । काम जारी रखता है ।
- सेठ नरम होकर, सुलह-समझौता करते हुए अरे प्यारे आफन्ती भाई । कैसी बात करते हो ? पुरानी दोस्ती है अपनी । हाथ जोड़ता हूँ तुम्हारे दोस्ती के नाते, अपनी दीवारें तोड़ना बन्द करो भई ।
- आफन्ती काम में जुटा क्यों-क्यों ? क्यों रोक दूँ ? देखो हाथ नहीं लगा रहा हूँ आपकी मंजिल को ।
- सेठ उसे एकदम से ख्याल आता है अच्छा मानलो मैं तुम्हारी भी मंजिल खरीद लूँ तो ? आफन्ती धीरे-धीरे अपना काम रोकता है बेच दो, बेच दो, अपनी मंजिल भी हमें बेच दो, राजी हो जाओ मंजूर हैं ?
- आफन्ती एकदम उछलता हुआ मंजूर हैं, मंजूर है, मंजूर हैं लेकिन
- सेठ हैं ?
- आफन्ती दो सौ सोने के सिक्के और दीजिये तो मंजूर है । सेठ अवाक रह जाता है । और अगर एक भी सिक्का कम मिला, तो समझ लेना आप कि मकान बेचने की बात तो दूर अपनी मंजिल जरूर तोड़ूँगा ।
- सेठ क्या ? अच्छा – अच्छा ठीक है, मैं पूरा मकान ही खरीद लेता हूँ ।
- ये कहते-कहते, बड़बड़ाते हुए, सेठ अपने को छोटा बनाता है, और धीरे से कोरस में गायब हो जाता है । आफन्ती भी कोरस में मिल जाता है । सूत्रधार तब उसका साफ़ा उतारते हैं ।
- कोरस मसखरों की ये कहानी, है बहुत पुरानी जी
- है बहुत पुरानी ।
- लुटरों को ये सबक सिखायें, चोट किसी को ना पहुँचाये ।।
- एक आवाज तो इसलिये ।
- सूत्रधार -1 सुनो ध्यान से, सुनो कान से
- सूत्रधार - 2 कहता है वो, बात पुरानी
- कोरस तक धिना धिन् तकधिनाधिन् तकधिनाधिन् तिरकिट धा-2

यही दोहराते हुए सूत्रधार अगली कहानी सुनाना आरम्भ करते हैं। कोरस के कहन के दौरान ही साफ़ा आफन्ती के सिर पहुँच जाता है।

दूसरा किस्सा : सोने की खेती

- सूत्रधार —1 और एक दिन फिर
- सूत्रधार —2 ले सोने के कुछ टुकड़े उधार
- गाना — 5 निकल पड़ा गधे पे सवार, आफन्ती भाई आफन्ती, आफन्ती भाई आफन्ती।
मोटा साफा सिर पे बांधे।
आफन्ती भाई आफन्ती, आफन्ती भाई आफन्ती।
बालू तट पर वो जा पहुँचा, ले इक छलनी अपने साथ,
और जल्दी—जल्दी लगा छानने, सोने के उन टुकड़ों को।
आफन्ती भाई आफन्ती।
आफन्ती भाई आफन्ती।
गीत गाते — गाते कोरस मंच अप पर दांये से बांये एक सीधी पंक्ति में खड़ी हो जाती है।
आफन्ती के सिर पर साफा पहुँच चुका होता है।
- सूत्रधार — 1 और कुछ ही देर बार, शिकार खेलते—खेलते, बादशाह वहाँ से गुजरा।
- कोरस तूत्रतुतु तूत्रतुतु तू
- कोरस ही से बादशाह निकलता है। आफन्ती के पीछे जाकर खड़ा हो जाता है, और आश्चर्यचकित उसे देखता है।
- बादशाह अरे ओ आफन्ती। आफन्ती ? खैरियत तो है ? तुम क्या कर रहे हो ? हैं आफन्ती ? ये कर रहे हो?
- आफन्ती सिर झुकाये, काम जारी रखते हुए मशगूल हूँ, जहाँपनाह, मशगूल हूँ।
- बादशाह आफन्ती को कुछ देर गौर से देखता है। उसके और करीब जाता है। अरे भाई आफन्ती, ऐसा भी क्या, कि सिर उठाने की भी फुर्सत नहीं?
- आफन्ती व्यस्तता जताते हुए मशगूल हूँ मैं, जहाँपनाह, इस वक्त सोने की बुआई में।
- बादशाह दो पल चकित होकर उसकी तरफ देखता है सोने की खेती ? फिर खिखियाते हुए अरे मेरे दानिशमन्द आफन्ती। ये तो बताओं, सोना बोने से तुम्हें क्या फायदा होगा?
- आफन्ती आश्चर्य से अरे। क्या ये भी आपको नहीं मालूम जहाँपनाह जनाब सोना आज बो रहा हूँ। इसकी फसल काटुँगा मैं शुक्रवार को। पहली फसल में कम से कम मिल ही जायेंगे मुझे दस थैलियाँ सोने की। आफन्ती फिर से सोने के टुकड़ों को तेजी से छानने लगता है।
- गाना —6 बादशाह पाँच हजार सोने की सिक्के
- कोरस ये सुनकर बादशाह रह गया सन्न।
सननन सननन सननन सन्न।।
जबड़ा उसका खुला, टपकने लगी लार झेंप मिटाते, सिर खुजलाते, जल्दी—जल्दी, चाले बढ़ाते
कहा नहीं कुछ सोचा उसने, ये कैसा व्यापार।

ऐसा कैसा—कैसा ऐसा, ये कैसा व्यापार ।।

- बादशाह आफन्ती से दोस्ती बढ़ाने की कोशिश करते हुए वाह । वाह आफन्ती, क्या अक्ल पायी है तुमने । सोने की खेती त्र वाह । वाह । वाह । लेकिन प्यारे भाई आफन्ती, इतना कम सोना बोकर अमीर कैसे बनोगे तुम ? भयी, अगर सोना बोना ही चाहते हो, तो ज्यादा से ज्यादा बोओ, है ना ?
- आफन्ती जहाँपनाह, सोना ज्यादा से ज्यादा बोना तो चाहता हूँ, लेकिन बीज अरे बीज कहाँ से लाऊँ ?
- बादशाह मत घबड़ाओ आफन्ती भाई, मत घबड़ाओ । हल तो इसका मेरे पास है । बन जाऊँ मैं अगर तुम्हारा साझेदार, तो महल से मेरे, जितना सोना चाहे ले जाओ ।
- आफन्ती मारे खुशी के उछलता है मंजूर है, मंजूर है, मंजूर हैं ।
- बादशाह माननी पड़ेगी मगर मेरी एक शर्त । बोलो, मंजूर है अब भी ? फसल की अस्सी फीसदी रहेगी मेरी बांकी तेरी ।
- आफन्ती उछलता हुआ मंजूर है, मंजूर है, मंजूर है ।
- कोरस सोने के सौ सिक्के लेने
महल पहुँचा बो अगले दिन ।
लेकर सिक्के चला आफन्ती ।
करने को सोने की खेती ।
हफ़ते भर की देरी में ही
महल वो फिर से पहुँचा ।
भेंट करी बादशाह को उसने
सोने की दस थैली ।
लगा उछलने खुशी से बादशाह
देखकर इतन सोना ।
- एक आवाज जारी किया हुक्म उसने,
- बादशाह हमारी रियासत की जनता से कहो की अपने सारे सोने के सिक्के हमारे शाही खजाने में डल बादे ।
- बादशाह शाही खजाने का सोना बोन के लिये आफन्ती को, दे दिया जाये — — — —
- नेपथ्य से रियासत के सारे सोने के सिक्के बोन के लिए आफन्तरी को दिये जायें
- कोरस तूत्रतुतु तूत्रतुतु तूत्रतुतु तू — — — —
- कोरस सोना ले लौटा आफन्ती
जल्दी अपने घर ।
लगा बांटने सोना को
मुहल्ले के गरीबों को ।
गीत गाते—गाते कोरस मुहल्ले वाले बनते हैं । आफन्ती और उनके बीच लेन—देन चलता है ।
कोरस ही से एक आवाज—
- एक आवाज अरे देखो, देखो—देखो । वो रहा आफन्ती । पहुँच रहा है फिर ।

कोरस बादशाह के पास ।

कोरस में से बादशाह मारे खुशी के उझलते-उलझते निकलता है और कोरस फिर दरबान में बदले जाते हैं

बादशाह अरे । आ गये आफन्ती ? आओ-आओ । इन्तजार था मुझे तुम्हारा ही ।

 खाली हाथ, मुँह लटकाये, आफन्ती धीरे-धीरे बादशाह के सामने आता है । उसके चेहरे को देखकर बादशाह की हँसी धीरे-धीरे गायब हो जाती है ।

बादशाह क्या बात है आफन्ती ? सब ठीक तो है है ? कहां है वो सोना ? कहाँ है सोने से लदी गाड़ियों का काफिला ? है आफन्ती ? बोलते-बोलते बादशाह उत्तेजित होने लगता है । है अफन्ती ? कहां हैं वो गाड़ियां बताओ भयी कहां है वो सोना ?

 आफन्ती माथा पकड़कर, फूट-फूटकर रोता है । उसकी ये हालत देख, बादशाह की उत्तेजना और बढ़ती है । कुछ देर और उसे देखता है

बादशाह अरे बोलो भयी, बात क्या है ?

आफन्ती रोते-बिलखते मैं बरबाद हो गया, लुट गया मैं-किस्मत तू ही फूट गयी मेरी तो हो हो हो — — । जैसे-जैसे आफन्ती रोता है वैसे ही बादशाह का चेहरा भी बदलता है । बादशाह का देख आफन्ती का रोना और तेज हो जाता है । क्या बताऊँ जहाँपनाह, इस बीच एक बूंद पानी नहीं गिरा, सारी फसल सूख गयी ही ही ही ही — — — — । फसल तो दूर, बीज से भी पूरी तरह हाथ धोना पड़ हा, हा, हा, हा, हा ।

 जैसे-जैसे आफन्ती अपना रोना रोता है, बादशाह की उत्तेजना गुस्से में बदल जाती है ।

बादशाह चीखते-चिल्लाते हुए पैर पटकता है झूठ बोलते हो । सफेद झूठ बोलते हो आफन्ती । धोखा दे रहे हो मुझे । झूठ । झूठ । झूठ । क्या सोना भी कहीं सूख सकता है ?

आफन्ती रोते-रोते मेरी बात पर आपको ताज्जुब क्यों हो रहा है जहाँपना ? धीरे-धीरे से मुस्कुराते हुए अगर आपको इस बात पर यकीन नहीं है कि सोना सूख सकता है, तो इस बात पर कैसे यकीन हो गया कि सोना को जमीन में बोया जा सकता है और उसकी फसल काटी जा सकती है ?

 बादशाह रोते-बिलखते हाय तौबा मचाते कोरस में गायब हो जाता हैं । आफन्ती भी कोरस में मिल जाता है । सत्रधार तब उसका साफा उतारते हैं ।

कोरस ये सुनकर बादशाह रह गया सन्न्

 सनसन सननन सननन सन्न् ।

 सोने की लालच में किया

 ये कैसा व्यापार

 ऐसा कैसा कैसा ऐसा

 ये कैसा व्यापार ।

 गीत गाते-गाते अगले किस्से को सुनाने दर्शाने की तैयारी हो जाती है ।

तीसरा किस्सा_ जटिल प्रश्न

आफन्ती के सिर पर साफा पहुंच चुका होता है । कोरस में से दोनों सूत्रधार तेजी से बाहर आते हैं-एक बायीं तरफ और दूसरा दायीं तरफ

सूत्रधार-1 अरे सुनो, सुनो, सुनो, सुनो । समझता था अपने को बाद बहुत ही अकलमन्द ।

सूत्रधार-2 हाँ, और अक्लमन्दों से पूछता था सवाल ऊंट पंटांग ।
कोरस बादशाह समझता था
अपने को बेजोड़ ।
सवाल करता बो ऊंटपटांग
वादा करता देंगे इनाम ।
सही होगा अगर जवाब ।
न दे पाते अगर जवाब ।
तो सजा सुनाता बादशाह ।
तौहीन करता विद्वानों का ।

सूत्रधार-1 और ऐसा ही बेत्तुका सवाल किया बादशाह ने एक दिन ।
सूत्रधार-2 अरे कहां है ?
सूत्रधार-1 अरे कहां है ?
सूत्रधार-2 अरे कहाँ है धरती का मर्कजी नुक्ता ?

सूत्रधारों के सवालों के बीच ही कोरस आलिम-फाज़िल का झुण्ड बन जाता है उनमें से एक बादशाह बन जाता है ।

बादशाह कहां है, अरे बताओं कहां है धरती का मर्कजी नुक्ता ? आलिम-फाजिल सिर झुकाये खड़े रहते हैं । उनकी परेशानी देख बादशाह उछल-उछल कर खुशी जताता है ।अरे तालीम आप लोगों की किस बात की, जब जवाब ही नहीं दे सकते हैं सवाल का ? दूर हो जाइये, अरे हो जाइये दूर हमार नजर से । बैठाओ इनको गधों पर उलटा मुडँवा दो इनके सिर और कर दो इनका मुंह ।

आलिम फ़ाजिल घेरा बनाकर प्रस्थान करते-करते आम जनता में बदल जाते हैं । उनमें से ही एक ढिंढोरची बनकर सामने आता है ।

ढिंढोरची सुने हे हे हे हे हे — — — — —
सुने सुने सुने हे हे हे हे हे — — — — —
ख़बर दी जाती हे कि
जो भी बादशाह सलामत के
सवाल का जवाब देगा
उसे दिया जायेगा इना हा हा हा हा — — — — — म् ।

पड़ोसी-1 अरे-अरे कैसा ये ढिंढारेची ।
पड़ोसी-2 बताए न सवाल तो देने क्या जवाब ।
कोरस अरे हाँ भयी । तो देंगे क्या जबाव ।
ढिंढोरची सुने हे हे हे हे हे — — — — —
सुने सुने सुने
बताएगा जो कि
है कहां मर्कजी नुक्ता
धरती का

देंगें बादशाह सलामत

उसे इना हा हा हा हा हा हा हा — — — — — म्।

नही दे पाये वो जवाब

देगें सज़ा हा हा हा हा हा हा हा — — — — — ।

जनता ढिंढोरची के पीछे—पीछे मंच का एक घेरा लगाते हैं और बादशाह के दरबान में बदल जाते हैं। आफन्ती का प्रवेश अपने गधे के साथ।

कोरस

सुनकर बादशाह की सुनादी

पहुँचा आफन्ती दरबार।

होकर गधे पे सवार

होकर गधे पे सवार।

बादशाह ने जब आपको देखा

किया झट से ये सवाल

किया झट से ये सवाल।

बादशाह

बताओ, बताओ, जानते हो क्या तुम कि कहां है धरती का मर्कजी नुक्ता ?

आफन्ती

बड़े अदब से जी हां जहाँपनाह, जानता हूँ।

बादशाह

अरे ? बताओ, जल्दी बताओ कहां है धरती का मर्कजी नुक्ता।

आफन्ती

धरती का मर्कजी नुक्ता, मेरे गधे की सामने वाली बाई टॉग के नीचे है।

बादशाह

झूठ, झूठ आफन्ती, बिल्कुल झूठ। यकीं नहीं आता मुझे तुम्हारी बात पर, जरा भी।

आफन्ती

अरे जहाँपनाह, न मानें तो नाप कर देख लीजिये धरती को।

बात मेरी गलत अगर वाबित हो, जो दीजियेगा जरूर मुझे — — — सज़ा।

बादशाह

झेंप मिटाते हुए हुम्म्। अच्छा—अच्छा, बताओ आफन्ती आसमान में कुल हैं कितने सितारे।

आफन्ती

उतने जितने आपकी दाढ़ी में बाल।

बादशाह

पैर पटकता हुआ झूठ, झूठ, झूठ, झूठ। बिल्कुल भी यकीन नहीं है मुझे तुम्हारी बात पर।

आफन्ती

बिल्कुल सौ फ़सदी सही है मेरी बात, जहाँपनाह। यकी न आये आपको अगर, तो जाकर आसमाँ के सारे सितारे गिन लीजिये। कहीं अगर फर्क हो, तो हमारा सिर हाजिर हैं।

बादशाह

अरे। पर पहले ये तो बताओ कि हमारी दाढ़ी में बाल कितने हैं। बताओ, बताओ, फौरन बताओ।

आफन्ती

फौरन एक हाथ से अपने गधे की पूँछ को उठाता है और दूसरे हाथ से बादशाह के मुँह की तरफ़ इशारा करता हुआ उतने ही जहाँपनाह, जितने मेरे गधे की पूँछ में है।

बादशाह

तमतमाता हुआ बदतमीज। तुम्हारी ये हिम्मत? बादशाह की दाढ़ी में और गधे की पूँछ में मुकाबला ? चिल्लाते चिल्लाते अचानक रुक जाता है। लेकिन आफन्ती ये मुमकिन कैसे हो सकता है ? बताओ, फौरन बताओ कि मेरी दाढ़ी के बाल और तुम्हारे इस गधे की पूँछ के बाल कैसे हो सकते हैं। बराबर ?

आफन्ती

मुस्कुराते हुए जहाँपनाह, पहले अपनी दाढ़ी के बाल गिन लीजिए और फिर मेरे, गधे की की पूँछ के। आपको तब मालूम हो जायेगा कि सौ फ़ीसदी सही है मेरी बात।

बादशाह

अवाक् रहते हुए भी, झेंप मिटान की कोशिश करता है

हम्। अरे—अरे.....अजीब बात है।

कोरस आफन्ती था हाज़िर जवाब
 निशाने पर लगा वो तीर
 , और बादशाह कुछ न कर सका
 सुनकर उसकी ये दलील।
 तिरकितकधा तिरकितकधा।
 तिककितकधा धिंधिंधा
 गाना गाते—गाते आफन्ती और उसका गधा कोरस में मिल जाते हैं। साफ़ चौथे आफन्ती के सिर
 पर पहुँच जाता है।

चौथा किस्सा : उड़ने वाला घौड़ा

कोरस में ही से सूत्रधार तेजी से निकल आते हैं

सूत्रधार —1 कुछ दिन बीते और एक बार फिर बादशाह को सूझी एक बेतुकी बात।

सूत्रधार—2 और क्या थी बेतुकी बात ?

कोरस मन में बादशाह के जागी
 एक बेतुकी ख्वाहिश।
 पूरी होगी कैसे होगी।
 ये बेतुकी ख्वाहिश।
 लगा सोचने
 किससे पूछे,
 कौन करेगा
 पूरी उसकी
 ख्वाहिश को साकार
 तर्क एक झट सूझा उसको
 आफन्ती को लिया बुलाय—3

कोरस, गाते—गाते दरबान में बदल जाते हैं। उनमें से एक बादशाह बन जाता है वो आवाज लगाते
 —लगाते कोरस बाहर जाता है

बादशाह अरे आफन्ती। ए आफन्ती। कहां हो आफन्ती ?

दरबान एक साथ जहाँपनाह — — — — ?

बादशाह झेंप मिटाते अरे ठीक है, ठीक है। आफन्ती को हाज़िर किया जाये।

दरबान एक साथ हुम्मू — — एक दूसरे को इशारा करते हुए देखते हैं, फिर बादशाह की तरफ देखते
 हैं। एक—एक करके पुकराते हैं आफन्ती को दरबार में हाज़िर किया जा.....ये।

कोरस बांधे अपना मोटा साफ़
 हाज़िर हुआ आफन्ती।
 सुनने दिलचस्पी से।

बड़े गौर से

बड़े ध्यान से

बादशाह की बेतुकी ख्वाहिश।

गाना दरबान रूपी कोरस गाता है उनके पीछे छिपा है आफन्ती "हाजिर हुआ आफन्ती" जब पक्ति गायी जाती है, तब आफन्ती उनके बीच में से निकलता है जैसे दीवार में दरवाजा हो

बादशाह आफन्ती को देख खुशी जताता है और आफन्ती, आ गये

आफन्ती मजा लेते हुए जहांपनाह, आए हमें याद करें और हम न हाजिर हों ? ऐसा कभी हुआ है? हंसते हुए अरे आप हमें न भी याद करें, तो भी हाजिर होते हैं हम।

बादशाह बात बदलते हुए बहुत दिनों से आफन्ती है ये दिली ख्वाहिश मेरी, कि आसमान में उड़कर ऊँ — — — — — चें, सैर करूँ मैं पू — — — — — री दुनिया की।

आफन्ती बड़े अदब से बहुत अच्छे जहांपनाह।

बादशाह देखकर दुनिया के उँचे पहाड़ों को जिससे दिल टकराते हों नदियों शहरों गावों, जगलों और मैदानों को बढाऊँ अपना तर्जुबा। हासिल करूँ मैं वो सब, जो अदीबों को भी लगे नायाब। बोलते-बोलते जैसे वो सपनों में खो सा गया हो अचानक आफन्ती की तरफ देखता है बता सकते हो क्या कोई तरकीब, पूरी होगी जिससे मेरी ये तमन्ना ?

आफन्ती जरूर जहांपनाह। जरूर बता सकता हूँ मैं आपको तरकीब, होगी जिससे पूरी आपकी ये ख्वाहिश।

बादशाह उछल —कूद कर वही अपनी जगह एक अजीब सा चक्कर काटता है। मारे खुशी के खिलखिला उठता है। वाह। वाह — — — — — वाह। वाह। वाह। वाह। वाह। कितने अक्लमंद हो तुम। बताओ, बताओ, जल्दी बताओ। कौन से ऐसी तरकीब है तेरे पास, पूरी होगी जिससे मेरी दिली ख्वाहिश ?

आफन्ती है नहीं कोई मुश्किल काम आसमां को छूना, जहांपनाह। लेकिन लेना चाहिए आप में — — — सन्न।

बादशाह सब ? — — — — — सन्न करने की ताकत मुझमें है बेहद। बताओ आफन्ती कैसे कराओगे तुम मुझे आसमानी दुनिया की सैर ?

आफन्ती देना होगा इसके लि, आपको अपना खूजरी रंग का घोड़ा मुझे। होकर उस पर मैं सवार, जाऊंगा मैं दू.....र एक पहाड़ पर लाऊंगा वहां से मैं एक खा....स बूटी। जब खात लगा घोड़ा उसे, तो निकल आयेगें पंख उसकी पीठ पर।

बादशाह वाह। वाह। वाह। वाह। वाह। वाह। वाह....। उड़ने वाला घोड़ा। ले जायेगा — — — — — दू.....र मुझे, मेरा उड़ने वाला घोड़ा देखूंगा मैं दुनियां की घोड़ें की पीठ से उँ— — — चें आसमान में ? है ना आफन्ती ?

आफन्ती जी हाँ जहांपनाह, जी हाँ सब करना होगा आपको लेकिन, चूंकि आने-जाने में लग सकता है तकरीबन एक साल द्य कर पायेंगे क्या आपक इतना इन्तजार ?

बादशाह अपनी जगह पर मारे खुशी के एक चक्कर काटता है अरे आफन्ती मेरे भाई, एक साल तो रहा दूर, तीन साल भी कर सकता हूँ मैं इंतजार इसके लिए ?

गाना फूला ना समाया बादशाह
खुशी से पागल हुआ वो।
पूरी होगी ख्वाहिश उसकी
ये सोच-सोचकर झूमा वो।

किया जारी हुक्म उसने
कि आफन्ती को दिया जाये।
खजूरी रंग का घोड़ा उसका
चांदी-सोना सब वो पाये।
हुआ वो घोड़े पर सवार
और मारा जैसे उसने चाबुक।
लगा खजूरी रंग का घोड़ा
हवा से करने बातें।

सूत्रधार -1 पहुंचा आफन्ती जब घर तो सुनाया बेगम साहिबा को उसने इस किस्सा।

सूत्रधार-2 किया घोड़े को हलाल और बनवाया बेगम साहिबा से उम्दा गोश्त।

बेगम साहिबा हंसी रोके बगैर इतराज करती है क्यों ? अरे क्यों बिलावजह आफत मोल रहे हो ?

आफन्ती आफत ? अरे आफत मौलाना ही तो सबसे मजेदार बात है, बैगम। आफत अगर हम न
मौले तो कहा से आयेगा ऐसा उम्दा गोश्त, हैं ?

पड़ोसियों का एक झुण्ड, मंच अप-राइट या अप-लेफ्ट से झांकता है

पड़ोसी एक साथ

हां भीय हां कहां से पकेगा ऐसा गोश्त ?

और कहां से मिलेगा चांदी सोना ?

नहीं लेगा मोल अगर आफत आफन्ती ,

बनाये रखे बादशाह सलामत अपनी बे-अक्ली को — — — ।